REET 2025
LEVEL-1&2
ROJGAR With ANKIT
वंदन बैच
संस्कृत
समास
Part -3
LIVE
16-01-2025 03:00 PM

तत्पुरुष समास

जिस समस्त पद में उत्तर पद का अर्थ प्रधान हो, वह तत्पुरुष समास कहलाता है।

जैसे- हरित्रातः

यहाँ 'त्रातः' प्रधान है।

तत्पुरुष : बहुव्रीहि समास से पूर्व तक तत्पुरुष का अधिकार होता है।

द्विगुश्च : द्विगु की भी तत्पुरुष संज्ञा होती है।

तत्पुरुष शब्द का विग्रह

(1) तस्य पुरुषः (बहुव्रीहिः)

(2) सः पुरुषः (तत्पुरुषः)

सूत्र :

प्रायेण उत्तर पदार्थ प्रधानः तत्पुरुष :

जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। तत्पुरुष समास में पूर्व पद विशेषण वाची और द्वितीय पद संज्ञावाची होता है, तो कहीं पर विशेष्य भी होता है।

- तत्पुरुष समास दो प्रकार के होते हैं-

(1) व्यधिकरण तत्पुरुष

(2) समानाधिकरण तत्पुरुष

- **व्यधिकरण तत्पुरुष :**

जहाँ विग्रह की विभक्तियाँ अलग-अलग होती हैं, जैसे राज्ञः पुरुषः -

राजपुरुषः

व्यधिकरण तत्पुरुष के अन्तर्गत द्वितीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक प्रयोग होता है।

• समानाधिकरण तत्पुरुष :

जहाँ विभक्तियाँ एक समान होती हैं जैसे: कृष्णसर्पः कृष्णः सर्पः

समानाधिकरण तत्पुरुष के अन्तर्गत कर्मधारय द्विगु, प्रादि, गति, उपपद, और अलुक् समास का प्रयोग होता है।

द्वितीया तत्पुरुष : जहाँ पर प्रथम पद द्वितीया विभक्ति में होता है, वहाँ पर द्वितीया तत्पुरुष समास होता है। श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त, आपन्न, गामी, बुभुक्षु इन अर्थों में द्वितीया तत्पुरुष होता है।

REET 2025 L - 1&2 संस्कृत वंदन बैच

कृष्णश्रितः	कृष्णम् श्रितः इति	कृष्ण से आश्रित
दुःखातीत	दुःखम् अतीतः इति	दुःख से परे
शोकपतितः	शोकं पतितः इति	शोक में पड़ा हुआ
प्रलयगतः	प्रलयं गतः इति	प्रलय में गया हुआ
ग्रामगतः	ग्रामं गतः इति	गाँव को गया हुआ
नरकपतितः	नरकं पतित : इति	नरक में पड़ा हुआ
कूपपतितः	कूपं पतित इति	कुए में पड़ा हुआ
ग्रामात्यस्तः	ग्रामम् अत्यस्तः इति	गाँव के घर पर पहुँचा हुआ
भयापन्नः	भयम् आपन्नः	भय पाने वाला
अन्नबुभुक्षुः	अन्नं बुभुक्षुः	अन्न का भूखा

सुखप्राप्तः	सुखं प्राप्तः	सुख को प्राप्त
ग्रामगमी	ग्रामं गामी	गाँव को जाने वाला

तृतीया तत्पुरुष समासः

सूत्रः तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचेन : तृतीयान्त का तृतीयान्त के साथ अर्थ से किए हुए गुणावचक शब्द के साथ तथा अर्थ के साथ समास होता है। BUT

- **कर्तृकरणे कृता बहुलम् :** कर्ता और करण में जो तृतीया तदन्त (उसके अंत का) कृदन्त के साथ में समास होता है बहुल प्रकार से।

- जब विग्रह में तत्पुरुष का प्रथमपद तृतीया विभक्ति का हो तब तृतीया तत्पुरुष होता है।

यथा- पूर्व, सदृश, सम, ऊन, कलह, निपुण, हीन रहित, मिश्र, श्लक्ष्ण (चिकना) शब्दों तथा इनके समानार्थक शब्दों तथा कृदन्त प्रत्यय के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

हरित्रातः	हरिणा त्रातः	हरि के द्वारा रक्षित
विष्णुत्रातः	विष्णुना त्रातः	विष्णु के द्वारा रक्षित
खड्गहतः	खड्गेन हतः	तलवार से मारा गया
बाणहतः	बाणेन हतः	बान के द्वारा मारा गया
देवदत्त	देवेन दत्तः	देव के द्वारा मारा गया
हस्तलिखितः	हस्तेन लिखितः	हाथ के द्वारा लिखा गया
नखभिन्नः	नखैः भिन्नः	नाखूनों से काटा गया
विद्याहीनः	विद्यया हीनः	विद्या से हीन
गुणहीनः	गुणैः हीन	गुणों से हीन

धनयुक्त	धनेन युक्तः	धन से युक्त
कालिदासरचितम्	कालिदासेन रचितम्	कालिदास के द्वारा रचित
पक्षपूर्वः	पक्षेण पूर्वः	पक्ष से पूर्व
एकोनम्	एकेन ऊनम्	एक से कम
धान्योनम्	धान्येन ऊनम्	फसल से कम
पादोनः	पादेन ऊनम्	पौना
भ्रातृसमः	भ्रात्रा समः	भाई के समान
वाक्कलहः	वाचा कलहः	वाणी से कलह
आचारनिपुणः	आचारेण निपुणः	आचार से निपुण
शर्करामिश्रम्	शर्करया मिश्रम्	शर्करा से मिश्रित

REET 2025 L - 1&2 संस्कृत वंदन बैच

मासावरः	मासेन अवरः	एक मास छोटा
दध्नोदनः	दध्ना ओदनः	दही भात
गुडधानाः	गुडेन धानाः	गुड़ से युक्त धान
अक्षिकाणः	अक्ष्णा काणः	आँख से काना

चतुर्थी तत्पुरुष

सूत्र: चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः बलि, हित, सुख, रक्षित और अर्थ शब्दों के साथ चतुर्थ्यन्त शब्दों का समास होता है।

यूपदारु	यूपाय दारु	यज्ञ के लिए लकड़ी
भोजनानन्नम्	भोजनाय अन्नं	भोजन के लिए अन्न
व्रतफलम्	व्रताय फलम्	व्रत के लिए फल
भूतबलिः	भूतेभ्यः बलिः	जीवों के लिए बलि
काकबलिः	काकेभ्यः बलिः	कौओं के लिए बलि
नरसुखम्	नराय सुखम्	मनुष्यों के लिए सुख

पाठशाला	पाठाय शाला	पढ़ाने के लिए शाला
जनहितम्	जनाय हितम्	जन के हित के लिए
धनलोभः	धनाय लोभः	धन के लिए लालच
भिक्षाट नम्	भिक्षायै अटनम्	भिक्षा के लिए घूमना
स्नानार्थम्	स्नानाय इदम्	यह स्नान के लिए

पंचमी तत्पुरुष

सूत्रः पञ्चमी भयेनः पंचमी अंत का भय प्राकृतिक सुबन्त के साथ समास विकल्प से होता है।

सूत्रः स्तोकान्तिकदूरार्थ-कृच्छातिक्तेनः क्तान्त प्राकृतिक सुबन्त के साथ स्तोक (कम) अन्तिक (पास में) दूर तथा इनके वाचक अपेत (वंचित) अपोढ (रहित) मुक्त, च्युत, पतित, अपत्रस्त (भयभीत) शब्दों के साथ पंचमी तत्पुरुष समास होता है। स्तोक अंतिक आदि से पर पंचमी विभक्ति का लोप नहीं होता।

उत्तर पद बाद में रहने पर, इसे अलुक् समास भी कहते हैं।

चोरभयम्	चोरात् भयम्	चोर से भय
सिंहभीतः	सिहात् भीतः	सिंह से भय
सर्पभयम्	सर्पात् भयम्	सर्प से भय
राजभीतः	राज्ञः भीतः	राजा से भय
संकटमुक्तः	संकटात् मुक्तः	संकट से मुक्त
पदच्युतः	पदात् च्युतः	पद से अलग
धर्मभ्रष्टः	धर्मात् भ्रष्टः	धर्म से भ्रष्ट
अधर्मजुगुप्सुः	अधर्मात् जुगुप्सुः	अधर्म से जुगुप्सा
सुखापेतः	सुखात् अपेतः	सुख से वंचित
कल्पनापोढः	कल्पनायाः अपोढ़ः	कल्पना से रहित

तरंगात्पत्रंस्त:	तरंगेभ्य: अपत्रस्त:	लहरों से डरा हुआ
दूरादागत	दूरात्आगत:	दूर से आया हुआ
स्वर्गपतित:	स्वर्गात् पतित:	स्वर्ग से गिरा हुआ
अभ्यासादागत:	अभ्यासात् आगत:	पास से आया हुआ
वृक्षपतित:	वृक्षात् पतित:	वृक्ष से गिरा हुआ।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

षष्ठी तत्पुरुष

सूत्र : षष्ठी : षष्ठ्यन्त का सुबन्त के साथ समास होता है, वह षष्ठी तत्पुरुष कहलाता है।

राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	सत्संगतिः	सतां संगतिः
आर्य संस्कृतिः	आर्याणाम् संस्कृतिः	कृष्णभक्तिः	कृष्णस्य भक्तिः
देवालयः	देवस्य आलयः	दुर्गामन्दिरम्	दुर्गायाः मन्दिरम्
कुलगुरुः	कुलस्य गुरुः	कुलपतिः	कुलस्य पतिः
लोकनाथः	लोकस्य नाथः	सुरेशः	सुराणां ईशः इति
आत्मवशम्	आत्मनः वशम्	नृपतिः	नृणां पतिः
अग्निहोता	अग्नेः होता	शतसंख्या	शतस्य संख्या

सप्तमी तत्पुरुष समास

सूत्र : सप्तमी शौण्डै : सप्तम्यन्त का सुबन्त शौण्ड आदि के साथ समास होता है। धूर्त, कितव (शठ) प्रवीण, संवीत (भूषित) अन्तर, अधि, पटु, पण्डित, कुशल, चपल, निपुण, सिद्ध, शुष्क, पक्व, बन्ध, इन शब्दों के साथ सप्तम्यन्त सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

अक्षशौण्डः	अक्षेषु शौण्डः
प्रेमधूर्तः	प्रेम्णि धूर्तः

अक्षधूर्तः	अक्षेषु धूर्तः
कर्मप्रवीणः	कर्मणि प्रवीणः
विद्या प्रवीणः	विद्यायां प्रवीणः
शास्त्र निपुणः	शास्त्रे निपुणः
आतप शुष्कः	आतपे शुष्कः
पाशबन्धः	पाशे बन्धः

रससिद्धः	रसे सिद्धः
सभापण्डितः	सभायां पण्डितः
चक्रबन्धः	चक्रे बन्धः
मध्यान्तरः	मध्ये अन्तरः
नीति निपुणः	नीतौ निपुणः

जलमग्नः	जले मग्नः
भूषण संवीतः	भूषणे संवीतः
पुष्पसंवीतः	पुष्पे संवीतः
वाक्पटुः	वाचि पटुः
आचार निपुणः	आचारे निपुणः

REET 2025 L - 1 & 2 संस्कृत वंदन बैच

वीणा प्रवीणः	वीणायां प्रवीणः

तत्पुरुष द्वितीया
तृतीया
चतुर्थी
पञ्चमी
षष्ठी
सप्तमी

समानाधिकरण तत्पुरुष समास जिसमें दोनों पदों की विभक्ति समान हो उसे समानाधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं। इसे ही कर्मधारय समास भी कहा जाता है। यथा 'कृष्णः सर्पः अपसर्पति' इस वाक्य में सर्प की गमन क्रिया के साथ-साथ उसकी विशेषता भी बतायी है। प्रथम पद कृष्णः तथा द्वितीय पद सर्पः एक ही प्रथमा विभक्ति के रूप हैं। अतः यहाँ समानाधिकरण तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास के उपभेद उपर्युक्त व्यधिकरण तथा समानाधिकरण समास के अतिरिक्त तत्पुरुष के अन्य उपभेद भी इस प्रकार हैं-

(क) नञ् तत्पुरुष समास - जिस समास का पूर्व पद नञ् (न) हो तथा उत्तर पद कोई संज्ञा या विशेषण युक्त हो उसे नञ् समास कहते हैं। यथा-

अनश्वः	न अश्वः	जो अश्व न हो
अकृतम्	न कृतम्	जो किया न हो
अनिच्छा	न इच्छा	इच्छा न हो

नञ् + स्वर = अन् = नञ् + इच्छा = अनिच्छा

नञ् + व्यञ्जन = अ = नञ् + धर्म = अधर्म

नञ् + कृतज्ञ = अकृतज्ञ

न + उदार = अनुदार

अनागतम्	न आगतम्	जो आया न हो
अगजः	न गजः	जो गज न हो
अनुक्तः	न उक्तः	जो उक्त न हो
अपुत्रः	न पुत्रः	जो पुत्र न हो

(ख) प्रादि तत्पुरुष समास - जिस तत्पुरुष समास का पूर्व पद 'कु' (अव्यय) गति संज्ञक शब्द या 'प्र' आदि होता है, उसे गति तत्पुरुष एवं प्रादि तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा- 'कुपुरुषः' - कुत्सितः पुरुषः। 'प्राचार्यः' - 'प्रगतः आचार्यः'।

(ग) उपपद तत्पुरुष समास - जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद उपपद (सुबन्त) तथा उत्तर पद कृत् प्रत्ययान्त (तिङ्ङ्क्त भिन्न समर्थ पद) होता है, वह उपपद तत्पुरुष समास कहलाता है। यथा-

समस्त पद	समास विग्रह	हिन्दी अर्थ
कुम्भकार:	कुभं करोति	जो कुम्भ बनाता है।
धर्मज्ञ:	धर्मं जानाति	जो धर्म जानता है।
सामग:	सामं गायति	जो सामवेद को जानता है।

आसनस्थः	आसने तिष्ठति	जो आसन पर बैठता है।
धनदः	धनं ददाति	जो धन देता है।

(घ) अलुक् तत्पुरुष समास जब तत्पुरुष में प्रथम पद अर्थात् पूर्व पद की विभक्ति का लोप नहीं होता तब उसे अलुक् तत्पुरुष कहते हैं। जैसे:-

समस्त पद	समास विग्रह	हिन्दी अर्थ
युधिष्ठिरः	युधि स्थिरः	युद्ध में स्थिर युधिष्ठिर
कृच्छादागतः	कृच्छात् आगतः	कठिनाई से आगत
सरसिजम्	सरसि जातम्	तालाब में उत्पन्न
खेचरः	खे चरति	आकाश में विचरण करनेवाला पक्षी

अभ्यासादागतः	अभ्यासात् आगतः	अभ्यास से आया हुआ
वाचस्पतिः	वाचः पतिः	वृहस्पति
आत्मनेपदम्	आत्मने पदम्	अपने लिए पद
परस्मैपदम्	परस्मैपदम्	दूसरे के लिए पद

कर्मधारय समास

'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' अर्थात् जहाँ विशेषण का समानाधिकरण विशेष्य के साथ बहुलता से होता है वहाँ कर्मधारय समास होता है। यह समास तत्पुरुष समास का ही एक भेद है। इस समास में दोनों पदों की विभक्तियाँ समान होती हैं। यदि लिंग विषम है तो द्वितीय पद अर्थात् उत्तर पद के आधार पर लिंग का निर्णय किया जाता है। कर्मधारय समास के भी चार भेद हैं-

कृष्णः सर्पः

(क) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय समानाधिकरण तत्पुरुष समास में यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है तो उसे विशेषण पूर्व पद कर्मधारय कहते हैं।

यथा-

समस्त पद	समास विग्रह	हिन्दी अर्थ
मधुरफलम्	मधुरं च तत्फलम्	मधुर जो फल
श्रेष्ठपुरुषाः	श्रेष्ठाः च ते पुरुषाः	श्रेष्ठ जो पुरुष
अन्धतमम्	अन्धं च तत् तमः	अन्धा करनेवाला तम

नीलाकाशः	नीलः आकाशः	नीला आकाश
महापुरुषः	महान् चासौ पुरुषः	महान् पुरुषः
महर्षिः	महान् चासौ ऋषिः	महान् ऋषि
गौरः बालकः	गौरः बालकः	गोरा बालक
महाराजः	महान् चासौ राजा	महान् राजा
सुन्दरबालकः	सुन्दरः च असौ बालकः	सुन्दर जो बालक

कृष्णसर्पः	कृष्णः सर्पः	काला सांप
महादेवः	महान् चासौ देवः	महादेव
श्वेताश्वः	श्वेतश्चासौ अश्वः	श्वेत घोड़ा
महारथीः	महान् चासौ रथी	महान् रथी
रक्तोत्पलम्	रक्तं च तत् उत्पलम्	लाल कमल
श्वेत वस्त्रः	श्वेत च तत् वस्त्रम्	श्वेत वस्त्र

(ख) उपमान पूर्वपद कर्मधारय- जब उपमानवाचक शब्द के साथ साधारण धर्मवाचक शब्दों का समास होता है वह उपमान पूर्वपद कर्मधारय होता है।यथा-

पुरुषसिंहः	पुरुषः सिंहः इव	सिंह के समान पुरुष
नरसिंहः	नरः सिंह इव	मनुष्य सिंह के समान
चन्द्राह्लादकः	चन्द्र इव आह्लादक	चन्द्र के समान कोमल
कमलकोमलम्	कमलम् इव कोमलम्	कमल के समान कोमल
पुरुषव्याघ्र	पुरुषः व्याघ्र इव	व्याघ्र के समान पुरुष

(ग) रूपक कर्मधारय उपमान और उपमेय के अभिन्न रूप से कल्पित होने से, उपमान-उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। यथा-

शोकाग्नि	शोक एव अग्नि	शोकरूपी अग्नि
विद्याधनम्	विद्या एव धनम्	विद्यारूपी धन
मुखकमलम्	मुखमेव कमलम्	मुखरूपी कमल
परीक्षापयोधिः	परीक्षा एव पयोधि	परीक्षारूपी सागर

(घ) उभयपद विशेषण कर्मधारय इस समास में विशेषण का विशेष्य के साथ समास होता है। यथा-

पीतकृष्णः	पीतः चासौ कृष्णः	पीला और काला
श्वेतकृष्णः	श्वेतः चासौ कृष्णः	श्वेत और काला
चराचरम्	चरं च अचरम् च	चराचर
सुप्तोत्थितः	पूर्वम् सुप्तः पश्चात् उत्थितः	पहले सोया फिर उठा
कृताकृतम्	कृतं च अकृतं च	किया हुआ और न किया हुआ

તત્પુરુષ

- સમાનાધિકરણ
  - કર્મધારય
- વ્યાધિકરણ
  - દ્વિતીયા - સપ્તમી

बहुव्रीहि समास

'अनेकम् अन्य-पदार्थे' अर्थात् जिसमें पूर्व तथा उत्तर पद अप्रधान तथा अन्य पद प्रधान होता है वह बहुव्रीहि समास कहलाता है। तात्पर्य यह है कि बहुव्रीहि में जितने भी पद होते हैं वे सभी मिलकर किसी दूसरे पद के विशेषण होते हैं- प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहि। उदाहरणतया - लम्बोदरः- लम्बं उदरं यस्य सः। यहाँ लम्बं उदरं दोनों विशेषण विशेष्य तो हैं लेकिन वे किसी अन्य (गणेश) की विशेषता बता रहे हैं।

बहुव्रीहि समास के भेद :

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि इसके दोनों पदों में समान विभक्ति होती है। यथा-

समस्त पद	समास-विग्रह	हिन्दी-अर्थ
पीताम्बरः	पीतम् अम्बरं यस्य सः (श्रीकृष्णः)	पीले वस्त्र वाला
लम्बोदरः	लम्बम् उदरं यस्य सः (श्रीकृष्णः)	लम्बा है उदर जिसका
जितेन्द्रियः	जितानि इन्द्रियाणि येन सः (मुनिः)	जीत ली हैं इन्द्रियाँ जिसने
श्वेताम्बरः	श्वेतम् अम्बरं यस्य सः (साधु)	श्वेत हैं वस्त्र जिसके
नीलकण्ठः	नीलं कण्ठं यस्य सः (शिवः)	नीला है कण्ठ जिसका

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

लब्धप्रतिष्ठाः	लब्धा प्रतिष्ठा येन सः (विद्वान्)	प्राप्त कर ली है प्रतिष्ठा जिसने
दामोदरः	दामम् उदरं यस्य सः (श्रीकृष्णः)	रस्सी है उदर पर जिसके
प्राप्तोदकः	प्राप्तं उदकं यम् सः	जल जिसे प्राप्त है
महाशयः	महान् आशयः यस्य सः	सभ्य व्यक्ति
यशोधनः	यशः एव धनं यस्य सः (राजा)	यश ही है धन जिसका

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि इसके दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में होते हैं - यथा-

चक्रपाणि:	चक्रं पाणौ यस्य स: (विष्णु)	चक्र है पाणि में जिसके
वीणापाणि:	वीणा पाणौ यस्या सा (सरस्वती)	वीणा है पाणि में जिसके
चन्द्रशेखर:	चन्द्र: शेखरे यस्य स: (शिव)	चन्द्र है शिखर पर जिसके
पीयूषपाणि	पीयूष: पाणौ यस्य स: (वैद्य)	पीयूष है पाणि में जिसके
मृगनयनी	मृगस्य नयने इव नयने यस्या सा (स्त्री)	मृग के नयनों के समान हैं नयन जिसके।